शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह-नवम्बर 2019 पंचम वर्ष अंक-06

राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा
राजीव गांधी शिक्षा मिशन, छत्तीसगढ़

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

एजेंडा एक: बच्चों को अपना अनुसरण करने दबाव नहीं बनाए

छत्तीसगढ़ में अब सीखने सिखाने एवं नियमित आकलन पर जोर दिया जाने लगा है | आपको अपनी शाला में नियमित रूप से फोर्मेटिव आकलन, एक निश्चित अंतराल से पीरियोडिक आकलन एवं वर्ष में दो बार समेटिव आकलन किया जाने लगा है | बहुत से बदलाव हमारी शालाओं और कार्यप्रणालियों में हो रहे हैं | शुरुआती दौर में हम सबको कुछ परेशानी आ सकती है पर धीरे-धीरे इन परिवर्तनों का लाभ हमें दिखाई देने लगेगा और हमारे काम बहुत अधिक आसन हो सकेंगे और परिणाम बेहतर आयेंगे |
इस सब परिवर्तनों पर केवल विभाग काम करे तो उसके सार्थक परिणाम सामने नहीं आ सकते | इन परिवर्तनों में पालकों को भी शामिल करते हुए उन्हें भी जागरूक कर उनका सहयोग भी लेना आवश्यक होगा | इस हेतु आप सभी के सहयोग से पालकों का कुछ मुद्दों पर उन्मुखीकरण अत्यंत आवश्यक है | एक बार उनके साथ इन मुद्दों पर चर्चा करवाएं:
अक्सर आपने लोगों को यह कहते सुना होगा कि उनका बच्चा बिगड़ गया है, वह उनकी बात नहीं सुनता, अपनी मनमर्जी करता है एक्सट्रा, एक्सट्रा, एक्सट्रा... लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि क्या बच्चा खुद ही बिगड़ जाता है। जी नहीं, बच्चों को बिगाड़ने में माता-पिता का ही हाथ होता है। पैरेंट्स अक्सर बच्चों को स्मार्ट और जीनियस बनाने के चक्कर में इस बात पर ध्यान नहीं देते कि आखिर बच्चों के दिमाग पर हमारी बातों का क्या असर हो रहा है। ***बच्चों पर अपनी इच्छा या सपनों को न लादें |***
हर बच्चे के अंदर काबिलियत होती है और वह अपनी प्रतिभा के साथ ही जन्म लेता है। लेकिन पैरेंट्स इस बात को नजरअंदाज कर देते हैं और बच्चे को भीड़ का हिस्सा बनाने में लग जाते हैं। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चे की खासियत पहचानें। उसी आधार पर बच्चे को ट्रेनिंग दें और आगे बढ़ने में मदद करें | बच्चे घर के अलावा स्कूल में आपके साथ बहुत समय बिताते हैं | आप भी प्रत्येक बच्चे की काबिलियत से परिचित हो सकते हैं यदि आप प्रत्येक बच्चे को ध्यान से अवलोकन करें | ***पालकों के साथ मिलकर उन्हें उनके बच्चों की काबलियत एवं रूचि के क्षेत्रों को साझा करें ताकि वे भी उन्हें उस दिशा में आगे बढाने में सहयोग कर सकें |***

बच्चा किसी चीज में कमजोर है तो उसकी उस कमजोरी को नजरअंदाज करने की बजाए उसे सहयोग करें, उसकी मदद करें, बच्चे को हतोत्साहित न करें। उदाहरण के लिए- अगर बच्चा मानसिक या शारीरिक रूप से

कमजोर है, वह किसी चीज को याद नहीं रख पाता तो उसे डांटने या गुस्सा करने की बजाए, उसकी इस कमजोरी को ताकत दें ताकि आने वाले दिनों में बच्चा उससे लड़ना सीख जाए। ***इन मुद्दों पर भी पालकों से चर्चा कर बच्चों के साथ किस प्रकार से व्यवहार किया जाए, इस बाबत समझाएं।***

आज के जमाने के पैरंट्स चाहते हैं कि उनका बच्चा पढ़ाई से लेकर स्पोर्ट्स, एक्सट्रा करिकुलर ऐक्टिविटीज, सिंगिंग-डांसिंग हर चीज में टॉपर बने। लेकिन जीवन जीने के लिए जो जरूरी चीजें हैं उनपर माता-पिता का ध्यान ही नहीं जाता। लिहाजा बेहद जरूरी है कि आप अपने बच्चे को जिंदगी जीना भी सिखाएं। दूसरों की मदद करना, दूसरों की खुशी का ख्याल रखना, सच्चाई के साथ लाइफ में आगे बढ़ना- ये सारी बातें भी बच्चों को बताना और सिखाना बेहद जरूरी है। ***पालकों को इस बारे में भी जागरूक करें कि वे अपने बच्चे को एक बेहतर इंसान बनाने की दिशा में शुरू से ही प्रयास करें एवं उन्हें विभिन्न मानवीय गुणों से परिचित करवाएं स्वयं भी अपना आदर्श प्रस्तुत करें। बच्चों के सामने ऐसी कोई हरकत नहीं करें जिससे उसके व्यक्तित्व में बुरा असर हो।***

अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से कभी भी नहीं करनी चाहिए। इससे उनमें ईर्ष्या के साथ-साथ हीन भावना भी आ सकती है और फिर वे किशोरावस्था में आते आते विद्रोही स्वभाव के हो जाते हैं। ***पालकों से चर्चा कर उन्हें अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से कभी भी न करें, इस बात के ली भी राजी करें और इसे उनके नियमित व्यवहार में लाने को कहें।***

बच्चों को प्रारंभ से ही आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करें। उन्हें अपने कार्यों को स्वयं करने का अवसर देवें। बहुत ज्यादा समझाइश देने के बदले ऐसी परिस्थिति निर्मित करें कि उनमें अपना कार्य स्वयं करने की आदत स्वयं ही बन जाए। ऐसा करते समय कभी कभी उन्हें काम न कर पाने या किसी क्षेत्र में हार का सामना करने भी देवें ताकि उन्हें जिन्दगी की सच्चाई से अवगत होने का अवसर स्वयं मिले। ***पालकों से बच्चों को उनके स्वयं के एवं घर के कार्यों को करवाने, अपना काम स्वयं करने की आदत विकसित करने एवं जीत-हार की चिंता किये बिना अपने काम में लगे रहने की आदत डलवाएं।***

समय तेजी से बदल रहा है और आपके कक्षागत प्रक्रियाओं में लाये जा रहे बदलाव तब तक सार्थक नहीं होंगे जब तक पालक भी अपने बच्चों के साथ व्यवहार में बदलाव न लाएं। इस दिशा में पालकों को मिलकर जागरूक करें। उनके साथ एक उन्मुखीकरण कार्यक्रम अवश्य आयोजित करें।

एजेंडा दो: बच्चे अपने आसपास से बहुत कुछ सीख लेते हैं

रायगढ़ के पुसौर विकासखंड के शिक्षकों ने शनिवारीय बैठक के दौरान अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के श्रेया द्वारा सुझाए गए आइडिया के आधार पर संकुल की शाला में लगभग पन्द्रह मिनट की चर्चा में कक्षा पहली से आठवीं तक के बच्चों के मुंह से पांच सौ से अधिक ऐसे अंग्रेजी के शब्द निकलवा लिए जिसमें से अधिकांश को उन्होंने अपने पाठ्यपुस्तक से न पढ़कर अपने आसपास से सुनकर जाने-अनजाने में सीख कर उपयोग में लाने लगे थे | इनमें से कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं-

A	Album, AC, Accident, Action, Almirah, Ambulance, App, Aunty, Auto, Automatic,
B	Baby, back, Bag, Balcony, Ball, Balloon, Bank, Bat, Battery, Bedroom, Bike, Bore
C	Cake, Camera, card, cartoon, catch, chain, change, charger, chicken, coat, costly
D	Daily, Dam, Dance, Decision, Design, Digital, Disturb, Double, Drop, Dust, Duty
E	Earphone, Easy, Eggroll, Emergency, Employee, End, Engine, Entry, Exam, Exit
F	Face, Facebook, Fan, Fail, Fall, Feet, Finish, Flight, Flop, Form, Free, Fridge, Full
G	Gate, Garden, Game, Gram, Gift, Glass, Go, Goal, God, Google, Greeting, Gun
H	Hall, Hand, Hang, Hanger, Headphone, Height, Helicopter, Hello, Hero, Hit, Horn
I	Ice cream, ID Card, Idea, Idly, Inbox, Inch, Injection, Inner, Invertor, Iodine, Iron
J	Jacket, Jail, Jam, Jar, JCB, Jeep, Jio, Join, Joker, Juice, Jump, June, Jungle, Just
K	Kabaddi, Kangaroo, Karate, Keeper, Kettle, Keypad, Kidnap, Kilo, Kitchen, Knock
L	Laptop, Last, Late, Lays, Letter, Level, Lever, Library, Light, Line, List, Locket, Low
M	Machine, Magic, Mam, Map, Marble, Market, Match, Member, Metro, Mobile, mood
N	Nail, Nail cutter, Nail polish, Napkin, Net, News, Next, Note, Number, Nurse, Nut
O	October, Off, Office, Oh ! Ok, Option, On, Online, Orange, Original, Out, Oxygen,
P	Packet, Paint, Paper, Packet, Parts, Period, Pipe, Plain, Plaster, Powder, Problem
Q	Quality, Qualify, Quantity, Quarter, Question, Quick, Quiz,
R	Rack, Racket, Radio, Radium, Rank, Rate, Ready, Real, Remote, Rest, Risk, Role
S	Safe, Saree, Scale, Scent, Scissor, Signal, Sim, Single, Slow, Sorry, Sweet, Switch
T	Ticket, Tie, Tiffin, Tight, Toffee, Toilet, Torch, Touch, Tourist, Tractor, Transfer, Try
U	Uncle, Umbrella, Under, Unemployment, Uniform, Unity, Up, UPS, Upside, Use,
V	Voltage, Valid, Van, Vase, Vegetable, Ventilator, Very, Violin, Visit, Volume, Vote
W	Wall, Waste, Watch, Water Color, Water Filter, Weight, wheel, Wheel Chair, Winner
X	X MAS, X Ray, Xerox,
Y	Yamaha, Yellow, Yes, Yoga, You, Yummy,
Z	Zebra Crossing, Zero, Zip, Zoo, Zoom, Zone

क्या हम A for apple के बदले उन्हें उनके वातावरण एवं आसपास के अनुभवों के आधार पर अंग्रेजी सिखाने पर जोर दे सकते हैं ?

एजेंडा तीन: जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरुकता

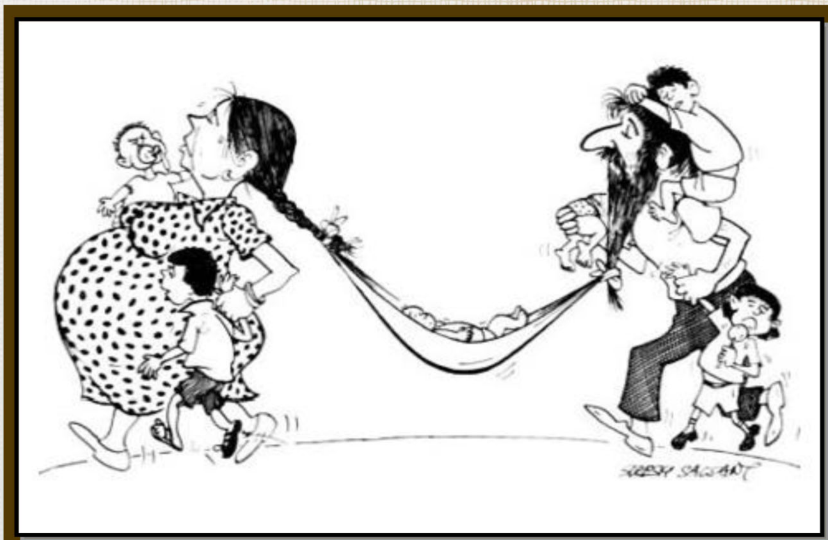

यदि हम विभिन्न विभागों की बात करें तो स्कूल शिक्षा विभाग सबसे अधिक मानव संसाधन वाला विभाग माना जा सकता है | हमारा विभाग एकमात्र ऐसा विभाग है जिसमें सबसे अधिक संख्या में हितग्राही बिना बुलाए रोज ही हमसे मिलने आते हैं | लगभग पचास लाख से अधिक बच्चे हमारे स्कूलों में रोज आते हैं | क्या दूसरे किसी विभाग जैसे स्वास्थ्य विभाग या पुलिस विभाग में इतनी बड़ी संख्या में लोग रोज आते हैं ?

इतनी बड़ी संख्या में हम प्रतिदिन लोगों से मिलते हैं और आमतौर पर ग्रामीण अंचलों में हमारे विभाग से ही पढ़े-लिखे लोग उपलब्ध होते हैं जिनकी बात पर बहुत वजन होता है | ग्रामीण अंचल में अच्छा काम करने वाले शिक्षकों की बहुत अधिक कद्र होती है | हमें देश के भविष्य एवं विकास से संबंधित विभिन्न योजनाओं की जानकारी समुदाय एवं बच्चों के साथ साझा करनी चाहिए |

इसीलिये स्वच्छता जैसे विषयों या शौचालय निर्माण आदि कार्य शाला में प्रारंभ कर सभी घरों में शौचालय निर्माण के लिए माहौल बच्चों के माध्यम से बनाया जाता है | उसी प्रकार हमें जनसंख्या शिक्षा पर भी प्रारंभ से ही बच्चों से बातचीत करते रहनी चाहिए और उनके मन में जनसंख्या अधिक होने से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जानकारी देते रहना चाहिए |

हमारे राज्य में कई कई वर्षों बाद बहुत बड़ी संख्या में शिक्षकों की नियुक्ति होने जा रही है | नौकरी मिलने के बाद युवा विवाह की सोचते हैं | ऐसे नए एवं पुराने शिक्षक जो विवाह करने वाले हैं या हाल में कर चुके हैं, उन्हें जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूक करें और स्वयं उन पर पालन करने हेतु प्रोत्साहित करें ताकि वे अपने विद्यार्थियों को भी इस अवधारणा पर बात करने में स्वयं को सक्षम महसूस करें |

एजेंडा चारः गणित मेला

भारत के प्रसिद्ध गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की याद में हम विगत कुछ वर्षों से स्कूलों में गणित सप्ताह का आयोजन करते हैं | इस वर्ष भी हम माह दिसंबर के तीसरे सप्ताह में एक सप्ताह के लिए गणित सप्ताह का आयोजन करेंगे और इस दौरान हम यह प्रयास करेंगे कि हमारी शालाओं में बच्चों को गणित की सभी मूलभूत अवधारणाओं और लर्निंग आउटकम पर पूरी मास्टरी हासिल हो जाए | कुछ सुझावात्मक गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:

- बच्चों के साथ समुदाय के समक्ष गणित में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन
- वैदिक गणित एवं उससे जुड़े विभिन्न विभिन्न पहलुओं से अवगत करवाना
- समुदाय के साथ ऐसे विभिन्न खेलों का आयोजन जिसमें गणित जुडा हो
- बच्चों द्वारा घर से विभिन्न उत्पाद लाकर उसे बाजार के माध्यम से बेचना
- पहाडा/ जोड़-घटाव/ गुणा-भाग/ उम्र बताओ जैसी प्रतियोगिता का आयोजन
- बच्चों से गाँव से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर सर्वे करवाते हुए उसका ग्राफ आदि का उपयोग कर समुदाय के समक्ष प्रदर्शन जैसे – गाँव के शाला जाने योग्य कुल कितने बच्चे हैं / कितने बच्चे अभी भी शाला से बाहर हैं / गाँव में कितने कच्चे पक्के घर हैं / कितने दो पहिया- चार पहिया वाहन हैं / विभिन्न आयु वर्ग में कितने व्यक्ति हैं – 50-60-70-80 आयु के ऊपर के व्यक्ति / गाँव में अलग अलग जानवरों का विवरण/ इनमे से कितने महिला और पुरुष हैं / अलग अलग व्यवसाय से जुड़े लोग / गाँव का इतिहास -सबसे पुराना भवन/ सबसे पहले सरकारी नौकरी पाने वाला व्यक्ति/ गाँव से पढ़कर बाहर अच्छे पद पर कार्य कर रहे व्यक्तियों की जानकारी/ गाँव में पूर्व में कभी अकाल, सूखा, बाढ़ या कोई अन्य आपदा आई हो तो उसका विवरण/ गाँव का सबसे मोटा सबसे दूबला- लंबा-बौना- सबसे लंबी नाक वाला व्यक्ति

अपने अपने जिले, विकासखंड एवं संकुलों में आपस में मिलकर बच्चों से गणित का डर दूर करने हेतु एवं दक्षता विकास हेतु गणित मेले का आयोजन करें और इसका व्यापक प्रचार-प्रसार भी करें |

एजेंडा पांच: राज्य स्तरीय आकलन के लिए तैयारी

छत्तीसगढ़ में स्कूलों में अब राज्य स्तर से नियमित आकलन का कार्य प्रारंभ हो गया है | गत वर्ष के समेटिव आकलन, फिर कक्षाओं में नियमित फोर्मेटिव आकलन एवं अब पीरियोडिक आकलन, सभी राज्य स्तर से प्रारंभ हो गया है और इन सबकी प्रविष्टियाँ भी मोबाइल से होने लगी है | परिवर्तन के इस प्रारंभिक दौर में विभिन्न स्तरों पर बहुत सी कठिनाइयां आई लेकिन हमारे शिक्षक साथियों नें भी इन कठिनाइयों का सामना करने में कोई कसर नहीं छोडी | सिग्नल की तलाश में पेड़ों में, छतों में, देर रात को जागकर और न जाने कितने तरीकों से इस कार्य को समय पर पूरा करने के लिए काफी मेहनत की | यह इस बात का सूचक है कि हम सब मिलकर अपने राज्य में बच्चों की गुणवत्ता में सुधार के लिए जिस तरह से प्रयास कर रहे हैं, वह दिन दूर नहीं जब हमारा राज्य स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम ला सकेंगे | इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आइये हम सब मिल कर कार्य करें |

बच्चों को नियमित आकलन के माध्यम से सुधार हो सके, इस हेतु-

1. विगत कक्षा के निर्धारित लर्निंग आउटकम की प्राप्ति सुनिश्चित करें
2. बच्चों को तनाव-मुक्त आकलन के लिए माहौल बनाकर कार्य करें
3. निर्धारित समय पर प्रत्येक दक्षता पर फोकस कर कार्य करें
4. बच्चों के छोटी-छोटी सफलताओं का जश्न मनाएं, उनकी तारीफ़ करें
5. बच्चों को मुस्कान पुस्तकालय से अधिक से अधिक सामग्री पढने दें
6. बच्चों को उपलब्ध अभ्यास पुस्तिकाओं पर पर्याप्त अभ्यास करवाएं
7. बच्चों द्वारा की जा रही त्रुटियों को समय पर सुधारने का प्रयास करें
8. बच्चों द्वारा सभी प्रश्नों को हल करने हेतु प्रेरित करें, प्रोत्साहित करें
9. बच्चों को समूह बनाकर एक दूसरे से सीखने की आदत डालें
10. आकलन के बाद यथाशीघ्र उसका फोलो-अप अवश्य लेवें

आकलन को एक त्यौहार के रूप में लेने का प्रयास करें और बच्चों को बिना किसी तनाव के इसमें सहभागी बनाए |

एजेंडा छह: पठन कौशल विकास हेतु अभ्यास

गत वर्ष सभी प्राथमिक शालाओं में मुस्कान पुस्तकालय के अंतर्गत तरंग नामक पुस्तक शिक्षकों के लिए सन्दर्भ साहित्य के रूप में भेजी गयी है | आप बच्चों को पाठ्यपुस्तक से अध्यापन के दौरान जब भी कोई नया वर्ण सिखाना हो तो आप तंरग नामक पुस्तक से सन्दर्भ सामग्री के रूप में अध्ययन कर बच्चों से अभ्यास के लिए पठन लेखन सामग्री सुलभ करवा सकते हैं | इससे बच्चों को पाठ्य-पुस्तकों से इतर अन्य कोई भी सामग्री दिखाई जाए तो वे उसे पढ़ सकेंगे और पढ़कर अर्थों को समझ भी सकेंगे |

उदाहरणस्वरुप मान लीजिये आपने कक्षा में "ऐ" सिखाया | आप तरंग में इस वर्ण को सिखाने के तरीके का अध्ययन करें और उसका उपयोग अपनी कक्षा में कर बच्चों से और अधिक अभ्यास करवा सकते हैं |

नीचे दिए सामग्री को देखने पर आप समझ सकेंगे कि –

सबसे पहले उस ध्वनि से संबंधित सही चित्र बच्चों को पहचानना है

फिर उसे लिखने का अभ्यास करना है | फिर पुराने सीखे ध्वनि को मात्रा लाकर पढने का अभ्यास करना है | नए वर्ण को अन्य वर्णों के साथ जोड़कर पढ़ना है | इतना हो जाने पर उस नए वर्ण का अधिक से अधिक उपयोग कर लिखी एक सामग्री को पढ़ने का प्रयास करना है | इसे आप श्यामपट में लिखकर बच्चों से पढने का अभ्यास करवा सकते हैं |

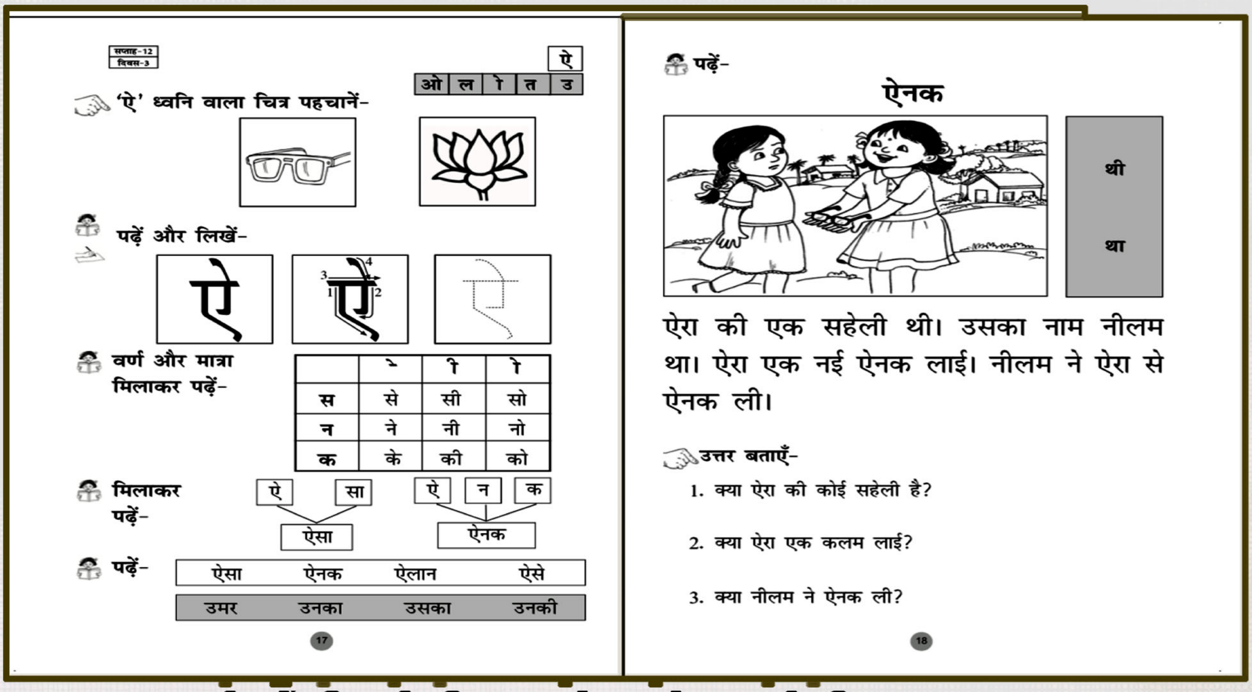

सप्ताह-12
दिवस-3

ऐ

ओ | ल | ो | त | उ

'ऐ' ध्वनि वाला चित्र पहचानें-

पढ़ें और लिखें-

ऐ

वर्ण और मात्रा मिलाकर पढ़ें-

	े	ी	ो
स	से	सी	सो
न	ने	नी	नो
क	के	की	को

मिलाकर पढ़ें-

ऐ + सा → ऐसा

ऐ + न + क → ऐनक

पढ़ें-

ऐसा ऐनक ऐलान ऐसे

उमर उनका उसका उनकी

17

पढ़ें-

ऐनक

थी
था

ऐरा की एक सहेली थी। उसका नाम नीलम था। ऐरा एक नई ऐनक लाई। नीलम ने ऐरा से ऐनक ली।

उत्तर बताएँ-

1. क्या ऐरा की कोई सहेली है?
2. क्या ऐरा एक कलम लाई?
3. क्या नीलम ने ऐनक ली?

18

कक्षा पहली में हिन्दी सिखाने वाले सभी शिक्षक एक बार मुस्कान पुस्तकालय से तरंग को देखकर उसे सन्दर्भ के रूप में इस्तेमाल करने का प्रयास करें |

एजेंडा सात: शाला का सौन्दर्यीकरण

बरसात के बाद अब हमें अपनी शालाओं की वाईट वाश एवं सौन्दर्यीकरण का काम तत्काल शुरू कर देना चाहिए | सभी शालाओं को सीधे उनके खाते में शाला अनुदान भेजा जा रहा है | इस बार हम इस अनुदान के कुछ प्रतिशत राशि से शाला सौन्दर्यीकरण हेतु निम्न कार्यों पर पर ठोस योजना बनाकर कार्य कर सकते हैं:

शाला परिसर में महत्वपूर्ण सूचनाएं-

शाला का विजन/ शाला में प्राप्त विभिन्न बजट का विवरण/ शाला में कार्यरत शिक्षकों का फोटो सहित विवरण/ मध्याहन भोजन का मीनू/ शाला सुरक्षा से संबंधित सूचनाएं एवं महत्वपूर्ण दूरभाष नंबर/ महत्वपूर्ण पदों से संबंधित जानकारी/ अन्य आवश्यक निर्देश

शाला में प्रिंट-रिच वातावरण-

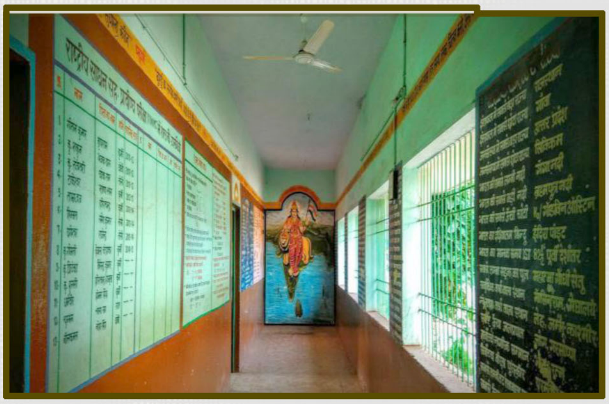

बच्चों को अपने आसपास प्रतिदिन देखकर याद कर पाने, समझ पाने की दृष्टि से आवश्यक जानकारियों का संकलन करते हुए उन्हें अपने शाला परिसर में सुन्दर तरीके से लिखकर प्रिंट-रिच वातावरण बनाया जा सकता है |

शाला में बाउंडरी का उपयोग-

शाला एक बाहरी एवं भीतरी दीवार में काफी महत्वपूर्ण सूचनाएं प्रदर्शित की जा सकती है | इसके अलावा गाँव में "आज की ताजा खबर" "आज का दीपक""आज का विचार""गाँव का मानचित्र" गणित-विज्ञान के सूत्र आदि लिखे जा सकते हैं |

शाला में बागवानी/ पोषण वाटिका-

शालाओं में उपलब्ध जमीन के आधार पर बागवानी एवं मध्याह्न भोजन हेतु किचन गार्डन या पोषण वाटिका बच्चों के सहयोग से तैयार की जा सकती है। युवा एवं इको क्लब के माध्यम से इस कार्य का संचालन करते हुए अन्य विभागों से संपर्क कर उनकी योजनाओं का लाभ लेते हुए आपको युवा एवं इको क्लब के माध्यम से इसे विकसित करने बजट उपलब्ध कराया जाएगा।

शाला में पेयजल एवं शौचालय-

शाला में स्वच्छ पेयजल एवं उसे रखने एवं उपयोग के लिए उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिए। शौचालय में रनिंग वाटर एवं कपडे लटकाने के हुक होना आवश्यक है। ऊपर टंकी नहीं होने पर पानी की टंकी में पानी भरा होना चाहिए। शाला क्षेत्र में पानी की उपलब्धता बनाए रखने सभी शालाओं में अनिवार्यतः रेन-वाटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था उपलब्ध होनी चाहिए।

बाधा-रहित वातावरण-

सभी शालाओं में बच्चों को बाधा-रहित वातावरण प्रदान करने हैण्ड-रेलिंग, शौचालय में पकड़ने के लिए रस्सी, ऐसे बच्चों के लिए अलग से शौचालय एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं के साथ बच्चों को भी संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।

हाथ धुलाई हेतु पानी की व्यवस्था-

सभी शालाओं में एक साथ बच्चों को हाथ धोते समय, उनके लंच ब्रेक के समय की बचत के लिए एक टेंक से जुड़े कई नल होने चाहिए ताकि एक साथ बच्चे हाथ धो

सके। व्यर्थ पानी को बहाकर उसे बागवानी करते हुए सोकपिट में भेजने की व्यवस्था होनी चाहिए।

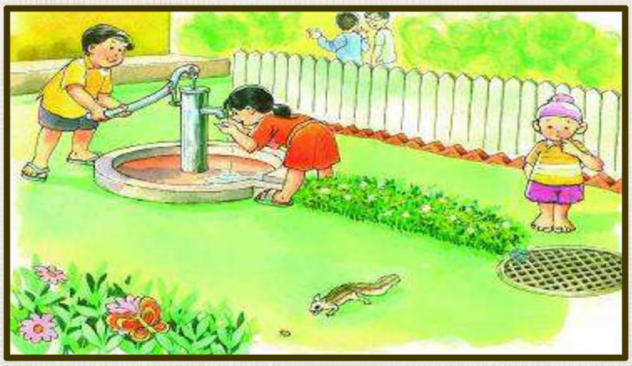

कचरों का निपटारा-

सभी शालाओं में कचरों के निपटारे के लिए कक्षाओं में डस्टबिन के साथ सूखे एवं गीले कचरे के निपटारे के लिए निर्धारित रंगों के डस्टबिन होने चाहिए और कचरों से कम्पोस्ट बनाने की व्यवस्था भी इको-क्लब के माध्यम से की जा सकती है।

खेल का मैदान-

बच्चों को खेलने के लिए सुरक्षित खेल का मैदान होना चाहिए। रेत एवं टायर का उपयोग कर बच्चों के लिए खेलने का स्थल बनाया जा सकता है।

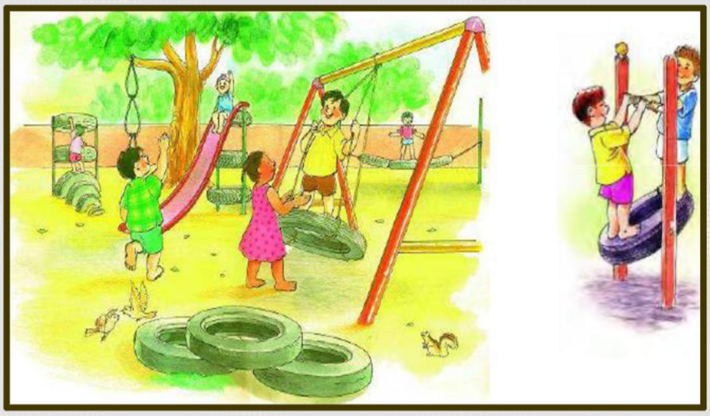

बच्चों से शाला सजावट में सहयोग-

शालाओं के सौन्दर्यीकरण के लिए बच्चों एवं समुदाय का सहयोग अवश्य लेवें ताकि उन्हें उसकी महत्ता समझ में आने के साथ-साथ उसकी देखभाल एवं रख-रखाव के लिए भी वे सतर्क रहें।

तो चलिए फिर देरी क्यों ? क्या आप नहीं चाहेंगे कि बच्चों को सीखने का एक बेहतर वातावरण स्कूल में मिले और आपको और आपके स्कूल को एक पहचान ?

एजेंडा आठ: आकांक्षी जिलों में गुणवत्ता सुधार

सभी स्तर पर इन सूचकांकों में सुधार के लिए कार्य करना सुनिश्चित करें-

1 a. कक्षा पांचवीं से कक्षा छठवीं में संक्रमण दर (Transmission Rate)
1 b. कक्षा आठवीं से कक्षा नवमीं में संक्रमण दर (Transmission Rate)
2. शौचालय सुविधा – लड़कियों के लिए सक्रिय शौचालय की सुविधा
3. स्वच्छ पेयजल सुविधा – शालाओं में स्वच्छ पेयजल की सुविधा उपलब्ध करना
4. कक्षा तीन, पाँच एवं आठ के बच्चों के भाषा, गणित में उपलब्धि स्तर में सुधार
5. महिला साक्षरता (15+)
6. सेकंडरी स्तर पर शालाओं में विद्युतीकरण
7. शिक्षा के अधिकार नार्म्स अनुरूप शिक्षक विद्यार्थी अनुपात
8. अकादमिक सत्र शुरू होते ही सभी बच्चों को पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करवाना

एजेंडा नौ: पानी पीना आवश्यक है

केरल में स्कूलों में बच्चों को नियमित पानी पीने की आदत डालने शाला समय में प्रतिदिन तीन बार घंटी बजाए जाने का सिस्टम प्रारंभ किया गया है | नियमित पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से बहुत सी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को दूर किया जा सकता है | **क्या हम अपनी शालाओं में इसे लागू कर सकते हैं ?**

एजेंडा दस: इस माह के लिए फोकस कार्य

सभी संकुल अनिवार्यत: यह तय करें कि उनके संकुल की सभी शालाओं में निम्नलिखित कार्य पूरी गंभीरता के साथ समयसीमा में पूरी हो जाए-

- शगुनोत्सव में जारी किये गए विभिन्न सूचकांक का नियमित उपयोग
- प्रत्येक शाला में शाला विकास योजना का उपलब्ध होना एवं उपयोग
- प्रत्येक शाला में आपदा प्रबन्धन योजना का उपलब्ध होना एवं सुरक्षा

प्रत्येक शाला में थर्ड पार्टी के माध्यम से इन मुद्दों पर प्रत्येक शाला में भ्रमण कर उसकी रिपोर्ट आनलाइन भेजी जाने वाली है | तैयारी रखें |